International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-3 May-June-2024 E-ISSN 2348-6457
( Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Impact Factor - 7.02 Email- editor@ijesrr.org

# मुगलकालीन संस्कृति, एकीकरण की प्रवृत्ति व संयुक्त संस्कृति का विकास

*Khushboo, Chaudhary, M.A. History, (UGC-NET).*
*Mail.ID: chaudharykhushboo0015@gmail.com*

## 1.1 प्रस्तावना

मध्यकालीन भारत में सामाजिक और आर्थिक जीवन में एक निरंतरता बनी रही। सल्तनतकालीन परिस्थितियों और मुगलकालीन परिस्थितियों में कोई मौलिक अंतर नहीं था। केवल कुछ आंशिक परिवर्तन आये थे। मुगलकालीन सामाजिक और आर्थिक जीवन के सम्बन्ध में अधिक विस्तृत सूचनाएँ उपलब्ध हैं। नगरीय जीवन के सम्बन्ध में मुख्यतः यूरोपीय यात्रियों के वृतांत, व्यापारिक कम्पनियों के विपन्न, तथा ग्रामीण जीवन के सम्बन्ध में मुगल प्रशासनिक दस्तावेज इस सूचना की प्राप्ति में सहायक हैं।

समाज में महिलाओं की स्थिति पहले की तुलना में सुधरी थी। मुगल काल में अनेक विदुषी और प्रभावशाली महिलाओं की चर्चा मिलती है, जो हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही वर्गों से सम्बन्धित थीं। जैसे जहाँआरा, नूरजहाँ, गुलबदन बेगम, चाँदबीबी, दुर्गावती और ताराबाई परन्तु सामान्यतः महिलाओं को अनेक असुविधाओं का सामना करना पड़ता था, जैसे पर्दा प्रथा, बहु–विवाह, बाल–विवाह, सती प्रथा, बाल–हत्या आदि। अकबर द्वारा सामाजिक सुधारों के प्रयास किये गए। उसने स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। बहुविवाह एवं सती का प्रचलन रोका और विवाह के लिए निम्नतम आयु निर्धारित करने के आदेश दिये। परन्तु ये प्रयास बहुत सफल सिद्ध नहीं हुए।[1]

## 1.2 सामाजिक जीवन

मुगलकालीन समाज की संरचना सल्तनतकाल से बहुत भिन्न नहीं थी, सिवाय इसके कि इस काल में जैनों की स्थिति में कुछ परिवर्तन आये थे, सिक्ख एक नये और महत्वपूर्ण सम्प्रदाय के रूप में उभरे थे और ईसाईयों की संख्या भी बढ़ी थी। उन्हें मुगल दरबार में ज्यादा प्रभाव भी प्राप्त हुआ था। हिन्दू समाज में पूर्ववत् जाति पर आधारित विभाजन बने रहे। भक्ति आन्दोलन के प्रभाव में जाति–प्रथा का खण्डन करने वाले सन्तों का पदार्पण भी हुआ। उनके द्वारा नए सम्प्रदायों की स्थापना भी हुई जिनके सदस्य जाति–प्रथा के सिद्धान्तों को नहीं मानते थे परन्तु इन सबका प्रभाव अत्यन्त सीमित रहा और जाति–प्रथा की जटिलता में कोई उल्लेखनीय कमी नहीं आई। मुस्लिम समाज का स्वरूप भी पूर्ववत् रहा। केवल विदेशी मुसलमानों में ईरानियों की संख्या और प्रभाव में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यह प्रक्रिया अकबर के समय में आरम्भ हुई। हब्शियों और अरबों का महत्व पूर्व काल की तुलना में बहुत कम हो गया। 18वीं शताब्दी तक मुगल सामन्तों में दो वर्ग ही मुख्य रूप से महत्वपूर्ण रह गए थे। ये थे भारतीय मुसलमान और तूरानी। इस काल की दरबारी गुटबंदियों और षडयंत्रों में इन दोनों की भूमिका विशेष महत्व रखती है।[2]

---

[1] अशरफ, आपसिट, पेज–205
[2] चोपड़ा, पी0एन. आपसिट, पेज–6

दूसरी ओर दासों की स्थिति में सल्तनकाल की तुलना में गिरावट आयी। दासों को अब मात्र सेवक के रूप में अथवा घरेलू काम–काज के सहायक के रूप में प्रयोग किया जाने लगा। उन्हें प्रशासनिक अथवा सैनिक पदों पर नियुक्ति वस्तुतः बन्द हो गयी। स्वाभाविक रूप से समाज में उनकी स्थिति में गिरावट आयी।

मुगलकाल में शिक्षा के क्षेत्र में विशेष प्रगति हुई। सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह आया कि मदरसों के पाठ्यक्रम में धर्मातिरिक्त विषयों, जैसे गणित, दर्शन, साहित्य आदि का महत्व बढ़ा। इसी के साथ गैर मुस्लिमों द्वारा फारसी शिक्षा के प्रति अधिक अभिरूचि दिखायी गयी। इसके दो कारण थे। एक तो हिन्दुओं को प्रशासनिक पदों पर काफी संख्या में नियुक्तियाँ मिलने लगी थीं और इनके लिए फारसी शिक्षा इन नौकरियों की प्राप्ति के लिए अनिवार्य थी क्योंकि फारसी ही प्रशासनिक कार्यों की भाषा थी। दूसरे पाठ्यक्रम में धर्मातिरिक्त विषयों का महत्व बढ़ने के कारण गैर–मुस्लिमों के लिए भी अब यह शिक्षा पद्धति अधिक उपयोगी बन गयी थी। यह परिवर्तन लोदी काल से ही आरम्भ हो गये थे, मगर इनका परिपक्व रूप मुगलकाल में ही प्रस्तुत हुआ। इसी के साथ–साथ हिन्दू और मुस्लिम समाज में शिक्षा का परम्परागत रूप भी पूर्ववत बना रहा।[3]

हिन्दू और मुस्लिम समाज के बीच सम्पर्क से एक मिली–जुली परम्परा का आरम्भ हुआ। रहन–सहन के ढंग, खान–पान, वेश–वूषा, त्यौहार एवं उत्सव आदि में एक मिली–जुली परम्परा विकसित हुई। मुगलकाल में इस समन्वयवादी का दरबारी जीवन से भी घनिष्ठ सम्पर्क रहा। अकबर द्वारा राजपूत शासकों के प्रति मैत्रीपूर्ण नीति अपनाने और वैवाहिक सम्बन्धों की स्थापना से शासक वर्ग के जीवन में भी समन्वय आया और मुगल दरबार के रीति–रिवाज पर राजपूत परम्परा का प्रभाव पड़ा। बाद में मुगल परम्पराओं ने राजपूतों के दरबारी जीवन को भी प्रभावित किया।

बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुके बाबरी' में भारतीय मुसलमानों को हिन्दुस्तानी कहकर सम्बोधित किया है। मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद उसने प्रशासन के क्षेत्र में अधिकांश हिन्दुओं को उसी पद पर रहने दिया। चंदेरी विजय के बाद मेदिनी राय की दो राजकुमारियों की शादी मिर्जा कामरान तथा हुमायूँ से करके अपनी उदारता का परिचय दिया और अकबर की राजपूत नीति की पृष्ठभूमि तैयार की।

अपने उत्तराधिकारी हुमायूं को सुझाव देते हुए बाबर ने कहा था कि भारतवर्ष में अनेक धमानुयायी रहते है। ऐसी परिस्थिति में तुम्हारा मस्तिष्क धार्मिक भावनाओं से प्रभावित न हो। तुम सभी धर्मो के प्रति सहानुभूति रखकर अपनी सम्पूर्ण प्रजा के लिए यथोचित न्याय करना। गायों का वध न करके हिन्दुओं का सहानुभूति प्राप्त करना। मंदिरों को ध्वस्त न करके हिन्दुओं की कृतज्ञता को प्रज्ञपत करने का प्रयास करना और साम्राज्य में शांति रखना। हिन्दुओं के दमन की अपेक्षा प्रेम की तलवार से इस्लाम धर्म का प्रचार करना। शिया तथा सुन्नी के मतभेदों पर कभी ध्यान न देना क्योंकि इससे इस्लाम की शक्ति क्षीण होगी। प्रशासन तथा राजनीति को धर्म के अवगुणों से बचाना। इस प्रकार बाबर प्रथम मुगल सम्राट था, जिसने अच्छे हिन्दू–मुस्लिम संबंध का बीजारोपण किया।[4]

हुमायूँ ने आजन्म अपने पिता के सुझाावों का पालन किया तथा उसके आदर्शो का अनुकरण किया। हिन्दुओं के प्रति उसके हृदय में विशेष स्थान था। चौसा के युद्व में एक हिन्दू भिष्ती ने उसकी प्राण रक्षा की।

---

[3] बनारसी प्रसाद सक्सेना, शाहजहां ऑफ देहलीख पृ0 27

[4] वी0ए0 स्मिथ, अकबर द ग्रेट मुगल, दिल्ली, 1958, पृष्ट–22; एडवर्डस एण्ड गैरेट, मुगल रूल, आपसिट, पृष्ठ 226

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-3 May-June-2024 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

कृतज्ञता में एक दिन के लिये सम्राट ने उसे राजगद्दी पर बिठाया। चौसा से भागते हुए गहोरा के हिन्दू राजा ने उसकी सहायत की थी। मालवा अभियान के समय मंझू के सुझाव पर उसने हिन्दुओं की हत्या बंद कर दी। राजा मालदेव ने उसे सहायता का आष्वासन दिया। अर्सकीन तथा जेम्स टाड के अनुसार हुमायूँ ने मेवाड़ की रानी कर्णवती की राखी स्वीकार कर सच्चे भाई के रूप में रानी की सहायता करने के लिए प्रस्थान किया, किन्तु कुछ विशेष परिस्थितियों के परिणामस्वरूप वह उचित समय पर सहायता न कर सका। अमरकोट के शासक ने उसे अपने यहां शरण दी। यहीं पर राजकुमार अकबर का जनम हुआ। इन परिस्थितियों और घटनाओं के परिणामस्वरूप उसके हृदय में हिन्दुओं के प्रति सहानुभूति थी। अतः सम्राट ने हिन्दू–मुस्लिम संबंध को अच्छा बनाने का सफल प्रयास किया।[5]

शेरशाह ने अपनी शासन नीति में हिन्दू मुसलमानों को समान रूप से सुविधाएँ प्रदान की। उसने दोनों सम्प्रदायों के लिये अलग–अलग सरायों की व्यवस्था की। टोडरमल तथ बरमजीद गौड की नियुक्ति करके हिन्दू मुस्लिम समन्वय का एक उदाहरण पेश किया। उसके उत्तराधिकारी मुहम्मद आदिल शाह ने राजस्थान में रेवाड़ी के घूसर बनिया हेमू को प्रधान सेनापति के पद पर नियुक्त किया।

मुगल सम्राट अकबर एक उदारवादी शासक था। वह भारतवर्ष को अपने मातृभूमि तथा हिन्दू, मुस्लिम सभी को अपनी प्रजा समझकर समान रूप से सुविधा प्रदान करना चाहता था। डा0 मुहम्मद यासीन के अनुसार, अकबर का मुख्य उददेष्य मुस्लिम सम्प्रदाय को भारतीय बनाकर राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक रंगमंच पर एकता प्रदान करना था। हिन्दू मुस्लिम असमानता को दूर करने के लिये 1564 में जजिया कर तथा 1563 में तीर्थ कर समाप्त कर दिया गया। 1562 में आगरे के शासक भारमल की राजकुमारी तथा जैसलमेर के शासक मोटा राजा उदयसिंह की पुत्री से शादी करके हिन्दू मुस्लिम संबंध की सराहनीय पृष्ठभूमि तैयार की। सम्राट अकबर ने राजकुमार सलीम का वैवाहित संबंध भगवानदास की पुत्री तथा मानसिंह की बहन से 1584 में सम्पन्न कराकर अपने उत्तराधिकारी के भी दृष्टिकोण में परिवर्तन करने का फल प्रयास किया। राजा भगवान दास, मानसिंह, टोडरमल तथा बीरबल को उच्च प्रशासनिक पदों पर नियुकित करके अपनी सौहार्दता तथा उदारवादी नीति का परिचय दिया। राजपूत नीति के अन्तर्गत रणथम्भौर के राजा सुरजन हाडा को विशेष सुविधाएँ प्रदान की।[6]

उसकी सम्पूर्ण प्रजा धर्म के नाम पर अनेक वर्गो में विभक्त थी। अतः वह दीन–इलाही के माध्यम से सम्पूर्ण प्रजा को एकता के सूत्र में बॉधना चाहता था। अकबर स्वयं सूर्य तथा अग्नि की उपासना करता था। हिन्दु ओं की भांति मस्तर पर तिलक लगाता था। सम्राट अकबर रक्षाबंधन, दीवाली, दशहरा तथा होली का त्यौहरा हिन्दुओं की भांति मनाता था। बदायूंनी तथा इसाई पादरियों के अनुसार उसने गौवध तथा मांसाहार पर प्रतिबन्ध लगाकर हिन्दुओं के प्रति सहानुभूतिपूर्ण नीति का परिचय दिया। साहित्य के क्षेत्र में उसने अथर्ववेद, कहाभारत तथा रामयण के अनुवाद फारसी में कराया। यही नहीं उसे लीलावती नामक गणित की पुस्तक का अनुवाद फारसी में कराकर हिन्दू साहित्य के प्रति सौहार्दता का परिचय दिया। वास्तुकला, चित्रकला पर तो हिन्दुओं और मुसलमानों का सहयोग स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, इस प्रकार सम्राट अकबर ने हिन्दू एवं मुसलमानों को राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में समान अधिकीर एवं सुविधाएँ प्रदान कर दोनों सम्प्रदायों के बीच आपसी सौहार्द को बढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभाई और निष्चित रूप से वह इसमें सफल रहा।

---

[5] मान्सरेट, एस0 जे0, दि कमेन्ट्री ऑफ हिज टू द कोर्ट ऑफ अकबर, अनुवाद, हायलैण्ड, उद्धृत एस0एन0 बनर्जी, कटक, 1922
[6] अकबरनामा, अनुवाद बैवरिज, जिल्द–3, कलकत्ता, 1897, पृ0 774

मुगल सम्राट जहॉंगीर का दृष्टिकोण हिन्दुओं के प्रति अकबर की अपेक्षा में कम उदारवादी था, लेकिन वह स्वयं रक्षाबंधन, दीवाली आदि के त्यौहरों में भाग लेता था। मेवाड़ के राण कर्णसिंह तथा अमरसिंह के साथ उसने सहानुभूतिपूर्ण नीति अपनाई। मानसिंह को प्रशासनिक एवं सैनिक पदों पर विभूषित किया। जहॉंगीर ने हिन्दुओं की स्थिति को हानि पहुॅंचाये बिना इस्लाम के हित में कार्य किया। उसने हिन्दुओं को तीर्थ यात्रा और नये मन्दिरों के निर्माण की अनुमति देने में अपने पिता की नीति का अनुसरण किया।[7]

शाहजहॉं का शासन कला रूढिवादिता तथा धार्मिक कट्टरवाद का समय माना जाता है। पादशाह के लेखकर के अनुसार शाहजहॉं ने अनेक हिन्दू मन्दिरों को ध्वस्त कराकर अपनी रूढ़िवादी धार्मिक नीति का परिचय दिया। केवल बनारस में 72 मन्दिरों को ध्वस्त कराया गया। जयसिंह तथा जसवंत सिंह को राज्य प्रशासन में स्थान देने के बावजूद भी धार्मिक कट्टरवाद का परित्याग नहीं किया। शाहजहॉं ने हिन्दुओं पर तीर्थ कर फिर से लगा दिया। इस आर्थिक बोझ के कारण बहुत से हिन्दू जो धार्मिक कार्य करना चाहते थे, उन्हे दिक्कतें आ गई। ऐसा उल्लेख मिलता है कि बनारस के एक विद्वान कविन्द्राचार्य के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल सम्राट से मिला, जिनके अनुरोध पर शाहजहां ने यह कर समाप्त कर दिया। ऐसा माना जाता है कि अपने पुत्र दारा के विचारों से प्रभावित होकर शाहजहां ने अपनी धार्मिक कट्टरवाद की नीति का परित्याग कर दिया। दारा के प्रभाव के कारण ही 1647 ई0 के बाद बहुत से ध्वस्त हुए मन्दिरों को फिर से निर्माण करने का अधिकारी हिन्दुओ को मिला।[8]

हिन्दू मुस्लिम सम्प्रदायों को समीप लोने में राजकुमार दारा शिकोह का प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय है। अपने जीवन काल में उसने हिन्दू धर्म, दर्शन का अध्ययन किया। रामायण, गीता तथा उपनिषद का अनुवाद फारसी भाषा में कराया। मुहम्मद काजिम के अनुसार वह ब्राह्मणों के समाज में रहता था, योगी, साधु तथा सन्यासियों के साथ घूमता था और उन्हें अपना गुरू मानता था। वह वेद को ईष्वर का शब्द मानता था। वह अल्लाह के पवित्र नाम के स्थान पर प्रभु का स्मरण करता था। उसने अपनी अॅंगूठी पर हिन्दी तथा संस्कृत के शब्दों को खदुवाया था। टाइटस के अनुसार, यदि उसकी हत्या नह होती और मुगल साम्राज्य की गद्दी प्राप्त हुई होती तो इतिहास का कुछ और ही स्वरूप होता।[9]

सम्राट औरंगजेब ने हिन्दुओं के प्रति उदारनीति नहीं अपनाई। उसके पूर्ववर्ती मुगल सम्राटों की नीतियों पर हिन्दू राजकुमारियों का स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है। परन्तु औरंगजेग के हमर में सिर्फ दो हिन्दू रानियॉं थी और उनका प्रभाव सम्राट पर नगण्य था। औरंगजेब ने हिन्दुओं के प्रति रूढ़िवादी तथा धार्मिक कट्टरता की नीति को अपनाया। 1669 ई0 में मथुरा, बनारस, अयोध्या में अनेक हिन्दू मंदिरों को ध्वस्त कराकर उसने मस्जिदों का निर्माण कराया। मुहम्मद साकी के अनुसार उसने इस्लाम की खोई हुई प्रतिष्ठ को पुनः बढ़ाया। जोधपुर, चित्तौड़ तथा आमेर में अनेक मंदिरों को गिरवाया। अमरोहा तथा सम्भल की मस्जिरों में आज भी हिन्दू मंदिरों का अवशेष दिखाई देते है।[10]

औरंगजेब ने मुस्लिम कानू के अनुसार कर निर्धारित किया तथा हिन्दओं पर जजिया कर पुनः लगाया। उसने धर्म परिवर्तन के लिए हिन्दुओं को धन तथा पद का प्रलोभन दिया। आगरा के पास अनेक राजपूतों का धर्म परिवर्तन कराया। उसकी शासन नीति में अच्छे हिन्दू मुस्लिम संबंध की कोई संभावना नहीं थी। धर्म

---

[7] ई0बी0 हावेल, हैन्ड बुक टू आगरा एण्ड द ताज, सिकन्दरा, फतेहपुर सीकरी एण्ड द नेबरहुड, पेज–66
[8] एफ0ई0 कीय; ए हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान, कलकत्ता, 1959, पृष्ठ–128
[9] स्लीमन, रैम्बल्स एण्ड रिक्लेक्शन्स, सम्पादित स्मिथ, पृ0 511–13
[10] बर्नियर, आपसिट, पृ0 229; एस0एम0 जाफर, एजूकेशन इन मुस्लिम इण्डिा, पेशावर, 1936, पृ0 97–98

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-11, Issue-3 May-June-2024 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

परिवर्तित हिन्दुओ को वह स्वयं कलमा पढ़ाता था और उन्हें खिलत तथा अन्य उपहारों से विभूषित करता था।

इस प्रकार हम देखते है कि मुगल काल में एक दो सम्राटों को धार्मिक कट्टरवादी नीति के बावजूद हिन्दू–मुस्लिम संबंध अच्छा बन रहा। सम्राट अकबर ने दोनों सम्प्रदायों को सामाजिक दृष्टि से एक साथ लाने का प्रयास किया, जिसमें वह काफी हद तक सफल रहा। मुसलमान अमीर हिन्दू राजाओं के साथ त्यौहारों में भाग लेते थे। यहां तक कि औरंगजेब के शासनकाल में भी बहादुर खॉ होली के त्यौहार पर राजा सुभान सिंह, राय सिंह राठौर, राजा अनूप सिंह और राजा मोखत सिंह चंदावत के यहा जाता था। मीर हसन तथा मीर मुहर्सान बड़ी श्रद्वा के साथ हिन्दू त्यौहारों में भाग लेते थे तथा हिन्दू राजा तथा अमीर उन्हें प्रीतिभोज पर आमंत्रित करते थे। सर यदुनाथ सरकार के अनुसार हिन्दू–मुस्लिम सम्बन्ध भारतवर्ष के लिए लाभदाया सिद्व हुआर। भारत में स्थायी शांति, रीति–रिवाज, साहित्य तथा कला के क्षेत्र में विचारों के आदान–प्रदान से एक नवीन संस्कृति का जन्म हुआ। ऐतिहासिक साहित्य का विकास भी हिन्दू–मुस्लिम संबंधों का परिणाम ही था।[11]

### 1.3 साम्राज्य की प्रशासनिक सेवाओं में हिन्दुओं की नियुक्तिः

मुगल सम्राटों ने एक सुदृढ़ साम्राज्य की स्थापना के उद्देष्य से हिन्दुओं की राज्य की सेवाओं में भिन्न–भिन्न पदों पर नियुक्त किया था। हिन्दुओं की नियुक्तियों के तीन प्रमुख कारण थे–प्रथम सम्राट के सम्बन्धियों को लाभान्वित करना, द्वितीय एक विष्वसनीय सेना का गठना करना और वित्त और न्याय विभागों की आवष्यकताओं की पूर्ति करना। जो लोब सम्राट के घनिष्ठ होते थे, उन्हें ऊँचे पद दिये गये। न्याय विभाग में अधिकांशतः उलेमा की प्रधानात थी। कुछ मामलें में जहॉ मुकदमा लड़ने वाले हिन्दू होते थे, वहां न्याय विभाग में हिन्दू कानून की व्याख्या करने के लिए पण्डितों की नियुक्ति की गई। बाबर और हुमायूं के समय इस संबंध में किसी स्पष्ट नीति का विकास नहीं हुआ था, लेकिन अकबर के समय इस विषय पर गम्भीरता से विचार किया गया।[12]

अकबर ने पदोन्नति योग्यता के आधार पर की थी। इसी आधार पर भगवान दास, मानसिंह, रामसिंह और टोडरमल उच्च पदों पर पहुॅचने में सफल हुए थे। अकबर की नीति को सफल बनाने के लिए टोडरमल ने अपने अधीन वित्त विभाग के कर्मचारियों को सारा हिसाब–किताब फारसी भाषा में तैयार करने का आदेश दिया था। इस प्रकार हिन्दुओं ने अपने हित में फारसी भाषा सीखी, जिससे उनकी पदोन्नति हुई। जहॉगीर ने भी राज्य की सेवाओं में हिन्दुओं की नियुक्ति की। इस संबंध में उसने अपने पिता अकबर की नीति का अनुसरण किया। हालॉकि उसके समय में हिन्दुओं की स्थिति में कुछ कमी आ गयी थी। क्योंकि मानसिंह ने जहॉगीर के विरोध में खुसरों का समर्थन मुगल सम्राट बनाने के लिये किया था। इससे जहॉगीर राजपूतों से नाराज हो गया था। लेकिन फिर भी उसके शासन काल में तीन हिन्दू गर्वनर के पद पर थे – बंगाल में मानसिंह, उड़ीसा में टोडरमल के पुत्र राजा कल्याण और गुजरात का गर्वनर राजा विक्रमजीत। उसके शासनकाल के तीसरे वर्ष में मोहनदास ने दीवान के पद पर काम किया। विलियम हाकिन्स के अनुसार जहॉगरी ने राजपूत सेनापतियों को नौकरी से निकाल दिया और उनके स्थान पर मुसलमानों को रखा। इसके परिणामस्वरूप उसका अधिकार दक्षिण की रियासतों पर समाप्त हो गया, जिन पर उसके पिता अकबर ने विजय प्राप्त की थी।[13]

---

[11] पी0एल0 रावत, आपसिट, पृ0 90; एफ0ई0 कीय, आपसिट, पृ0 125
[12] मनूची, स्टोरियो द मोगोर, अनुवाद, इरविन, जिल्द–2, लन्दन, 1907–08, पेज–8
[13] ए0 रशीद, सोसाइटी एण्ड कल्चर इन मेडिवल इंडिया, कलकत्ता, 1969, पृ0 150

## 1.4 निष्कर्ष

शाहजहॉ के समय राजा टोडरमल, राय काशीराम और राय बहारमल ऊॅचे पदों पर आसी थे। ‘चहार चमन’ के लेखक राय चन्द्रभान दारूल इन्शा के प्रधान थे। विभागों के प्रधान प्रायः हिन्दू होते थे। दीवाने तने और दीवान बयूतात के प्रधान राय मुकन्ददास थे। दक्षिण में राय दयानत राम और लाहौर में सोभाचन्द दीवान थे। शाहजहॉ के समय में जयसिंह और जसवन्त सिंह प्रमुख अमीर थे और प्रान्तीय गर्वनरों के पद पर काम कर रहे थे। मुसलमान और राजपूत केवन सेना में ही कार्य करने में रूचि दिखलाते थे, ऐसी परिस्थिति में प्रायः अन्य हिन्दुओं ने दूसरे विभागीय रिक्त स्थानों पर कार्य करना शुरू किया। शाहजहॉ के समय में 241 मनसबदारों में जिनका दर्जा एक हजार और उससे अधिक था, 51 मनसबदार हिन्दू थे। शाहजहॉ के समय में सबसे महत्वपूर्ण नियुक्ति शाहजी भोंसले की थी, जिसको छः हजार का मनसब दिया गया था। उनका मनसब सभी हिन्दू मनसबदारों से अधिक था। उत्तराधिकार के संघर्ष के समय जसवन्त सिंह साम्राज्य के सबसे प्रमुख अमीर थे। उनको 6 हजार का मनसब मिला हुआ था। जिस समय औरंगजेब दक्षिण का वासयराय था, शाहजहॉ ने उसकी राजपूत विरोधी नीति की आलोचना की। औरंगजेब ने राय मायादास के स्थान पर एक मुस्लिम की नियुक्ति की थी।[14]

औरंगजेब के शासन के प्रारम्भ में जसवन्त सिंह और जयसिंह प्रमुख अमीर थे। ऐसा माना जाता था कि औरंगजेब की मृत्यु के समय हिन्दू मनसबदारों की संख्या 50 थी। औरंगजेब के अन्तिम समय में पूरे साम्राज्य में कोई हिन्दू गर्वनर के पर पर नहीं था और हिन्दू दीवान रजा रघुनाथ का स्थान ग्रहण करने के लिये कोई हिन्दू उस समय नहीं था। कुछ प्रमाण मिलते हैं, जिससे पता चलता है कि औरंगजेब ने हिन्दुओं को सरकारी पद पर रखने पर रोक लगा दी थी। ‘मिसिरे आलमगीरी’ के अनुसार औरंगजेब ने एक आदेश के अन्तर्गत वित्त विभाग में हिन्दुओं की नियुक्ति की मनाही कर दी थी। कुछ आधुनिक इतिहासकारों ने औरंगजेब के इस कार्य का समर्थन किया है। उनके अनुसार हिन्दू कर्मचारियों को चोरी, रिष्वत और भ्रष्टाचार के कारण वित्त विभाग से निकाला गया। हिन्दुओं के अभाव में सरकारी कार्य में गतिरोध उत्पन्न हो जाने के कारण उसने अपने इस आदेश में संशोधन कर दिया और कहा कि वित्त विभाग में पचास प्रतिशत हिन्दू और पचार प्रतिशत मुसलमान होने चाहिये। उसने हिन्दू सैनिक अधिकारियों को अपनी व्यक्तिगत सेवा में नहीं रखा। लेकिन सम्पूर्ण मुगलकाल में सेना में हिन्दुओं की उपस्थित लगातार बनी रही। बर्नियर ने लिखा है कि राजपूत वीर और स्वामिभक्त होते थे। युद्व स्थल से भागने की अपेक्षा वे अपने प्राणों की आहुति देना श्रेयस्कर समझते थे। यही कारण था कि मुगल सम्राटों ने राजपूतों को अपने सेना में बनाये रखा। राजपूतों का उपयोग विद्रोही राजपूत राजाओं के विरूद्व किया जाता था। इसके अतिरिक्त उन्हें पठानों और विद्रोही मुगल अमीरों के विरूद्व तथा दक्षिण भारत के युद्वों में लड़ने के लिय भेजा गया।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वी0ए0 स्मिथ, अकबर द ग्रेट मुगल, दिल्ली, 1958, पृष्ट–22; एडवर्डस एण्ड गैरेट, मुगल रूल, आपसिट, पृष्ठ 226
2. मान्सरेट, एस0 जे0, दि कमेन्ट्री ऑफ हिज टू द कोर्ट ऑफ अकबर, अनुवाद, हायलैण्ड, उद्धृत एस0एन0 बनर्जी, कटक, 1922
3. अकबरनामा, अनुवाद बैवरिज, जिल्द–3, कलकत्ता, 1897, पृ0 774

[14] आइने अकबरी, ब्लाकमेन, आपसिट, पृ0 278; एस0एम0 जाफर, एजूकेशन, आपसिट, पृ0 86

4. ई0बी0 हावेल, हैन्ड बुक टू आगरा एण्ड द ताज, सिकन्दरा, फतेहपुर सीकरी एण्ड द नेबरहुड, पेज–66
5. एफ0ई0 कीय; ए हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन इण्डिया एण्ड पाकिस्तान, कलकत्ता, 1959, पृष्ठ–128
6. स्लीमन, रैम्बल्स एण्ड रिक्लेकशन्स, सम्पादित स्मिथ, पृ0 511–13
7. बर्नियर, आपसिट, पृ0 229; एस0एम0 जाफर, एजूकेशन इन मुस्लिम इण्डिा, पेशावर, 1936, पृ0 97–98
8. पी0एल0 रावत, आपसिट, पृ0 90; एफ0ई0 कीय, आपसिट, पृ0 125
9. मनूची, स्टोरियो द मोगोर, अनुवाद, इरविन, जिल्द–2, लन्दन, 1907–08, पेज–8
10. ए0 रशीद, सोसाइटी एण्ड कल्चर इन मेडिवल इंडिया, कलकत्ता, 1969, पृ0 150
11. आइने अकबरी, ब्लाकमेन, आपसिट, पृ0 278; एस0एम0 जाफर, एजूकेशन, आपसिट, पृ0 86
12. एस0एम0 जाफर, एजुकेशन आपसिट, पृ0–20, कल्चरल एस्पेक्टस, आपसिट, पृ0 78